ATAL BIHARI UNIVERSITY BILASPUR, CHHATISGARH

INSTITUTE OF ADVANCED STYDY IN EDUCATION BILASPUR

TWO YEAR

MASTER OF EDUCATION (SEM-PART -III)

SECOND YEAR

SUBJECT

PAPER -2 CODE 203 -U-2

CONTENT OF COMMUNICATION SKILL AND ICT

UNIT-II

BY

D.K. JAIN

HEAD OF ICT DEPARTMENT

SEMESTER III Paper Code 203 PAPER-2 by D.K. Jain

PAPER NAME- COMMMUNICATION SKILL AND ICT

UNIT -II COMMMUNICATION IN TEACHING AND LEARNING

- Elements of communication. communication types -Educational and public communication One to One, One to Many, Many to Many
- Information and communication technologies in teaching contexts and the need for the ICT devices

उपरोक्त में पहले बिन्दु पर चर्चा करने के पहले थोड़ी सी चर्चा इससे जुड़ी हुई अन्य बातों पर कर लें यद्यपि इसकी चर्चा पूर्व यूनिट में हो चुकी है।

What is communication संम्प्रेषण क्या है ?

सरल शब्दों में संम्प्रेषण का अर्थ होता है कि किसी सूचना या जानकारी को एक व्यक्ति जिसे संम्प्रेषक कहा जाता है उसे दूसरे व्यक्ति जिसे ग्राही कहा जाता है उस तक किसी माध्यम से पहुॅचाना होता है यह तब तक पूरा नही होता जब तक जिस रूप में प्रेषक ने जो सूचना या जानकारी ग्राही को भेजी है वह उस तक उसरूप में न पहुॅच जावें, क्योकि सूचना के आदान प्रदान में सूचना की कोडिंग एवं डिकोडिंग भी की जाती है , इसके उसी रूप में प्राप्त होने की पुष्टि ग्राही स्वयं करता है । इन सब बातों से यह स्पष्ट हो रहा है कि सूचना संम्प्रेषण की इस प्रकिया में कई तत्व या Elements होतें है जिसे हम इन नामों से जानते हैं

1. संम्प्रेषी या प्रेषक अथवा स्त्रोत Sender or Source
2. ग्राही या सूचना प्राप्तकर्ता Receiver
3. सूचना या जानकारी Message or Information
4. माध्यम अथवा चैनल Approach or Channel
5. कोडिग 6. डिकोडिंग 7. फीडबैक या पुष्टि Feedback

इन सातों के द्वारा इस प्रकिया में एक चक्र इस प्रकार से पूरा होता है जिसे निम्न रेखा चित्र के माध्यम से समझ सकते हैं–:

हम इसे इस ब्लाक डायाग्राम के माध्यम से भी बहुत सरल ढ़ग से समझ सकते हैं

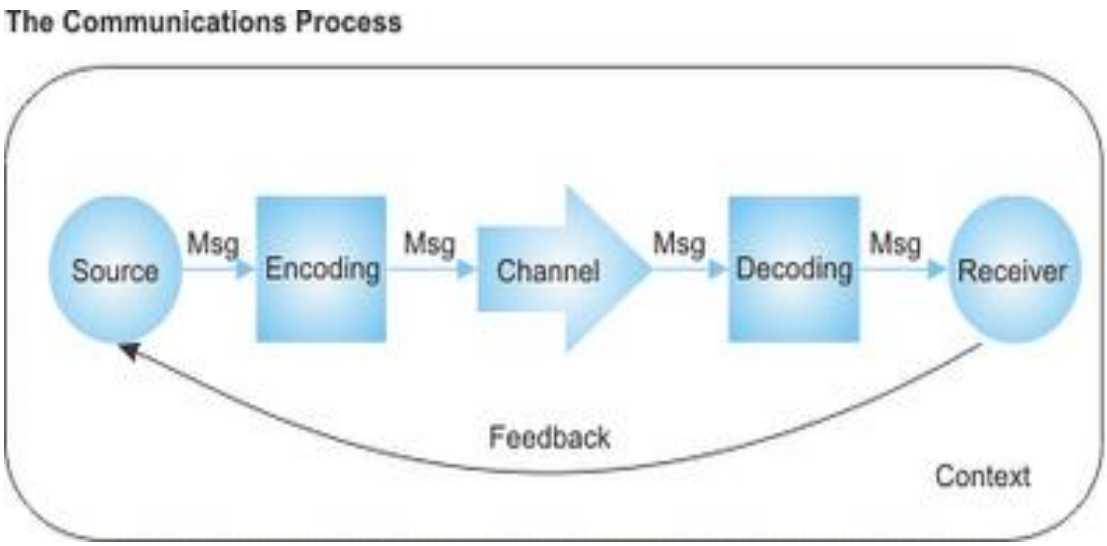

आईये अब सभी घटकों पर संक्षिप्त चर्चा करें –

1.सम्प्रेषक – यह कोई व्यक्ति ,समूह या संस्थान अथवा निकाय हो सकता है जो सूचना या जानकारी का दूसरे व्यक्ति या समूह तक भेजना चाहता है ।
2.ग्राही – प्रेषक द्वारा भेजी गई सूचना या जानकारी को जब कोई व्यक्ति या समूह या निकाय प्राप्त कर समझ जाता है तो वह प्राप्तकर्ता ही ग्राही कहलाता है
3.सूचना या जानकारी – कोई संदेश,चित्र,या सलाह अथवा आवेदन –निवेदन जैसी कोई जानकारी Message कहलाती है।
4. माध्यम – सूचना को भेजने का वह साधन जिसकी सहायता से सूचना या जानकारी प्रेषक से ग्राही तक पहुँचायी जाती है माध्यम या चैनल कहलाता है । जैसे टेलिग्राम या टेलिफोन या इंटरनेट आदि।
5. कोडिंग – सूचना को भेजने के लिये उसक स्वरूप को बदलना होता है, क्योंकि उस स्वरूप में सूचना को भेजना संभव नही होता इसें ही कोडिंग कहा जाता है , जो कि एक अलग प्रकार की भाषा होती है कम्प्यूटर में जिस प्रकार से बायोनरी नम्बर का उपयोग कोडिंग के लिये किया जाता है ।
6. संदेश या जानकारी जब प्रेषक के द्वारा ग्राही को भेजी जाती है तो वह परिवर्तित स्वरूप में जिसे कोडिंग कहते हैं होती है यह इस रूप में ग्राही के समझने लायक नही होती है, ऐसी स्थिति में इसे समझने लायक बनाने के लिये पुनः उसी स्वरूप में लाने के लिये उसकी डिकोडिंग की जाती है, जिससे संदेश या जानकारी को ग्राही समझ सके ।
7. प्रेषक द्वारा भेजी गई जानकारी या सूचना को ग्राही प्राप्त कर यदि उसे वैसा ही समझ लेता है तो यह सम्प्रेषण की पूरी

प्रकिया सफल मानी जाती है, इय हेतु ग्राही कोई प्रतिकिया फीडबैक के रूप में वापस प्रेषक को देता है।

उदाहरण यदि कोई व्यक्ति मोबाइल से दूसरे व्यक्ति को संदेश या बातचीत के लिये काल करता है तो यहॉ पर बातचीत के बाद यहॉ इस प्रकिया में ये ये घटक इस प्रकार होगें –:

1. पहला व्यक्ति जिसने मोबाइल से जानकारी – संम्प्रेषी या Sender
2. दूसरा व्यक्ति जिसने मोबाइल पर बात किया –ग्राही या Reciver
3. मोबाइल से किया गया मैसेज या बातचीत – संदेश या Message
4. मोबाइल से जिस नेटवर्क के माध्यम से बात हुई–माध्यम या चैनल
5. मोबाइल से मैसेज को भेजने के लिये किसा गई कोडिंग
6. मोबाइल मैसेज को पढ़ने/समझने के लिये किया गया डिकोडिंग
7. दूसरा व्यक्ति मैसेज को प्राप्त करने या बातचीत में जो उसकी प्रतिकिया उत्तर के रूप में सामने वाले व्यक्ति को मिलता है वही फीडबैक कहलायेगा, मोबाइल में लगातार बातचीत प्रतिकिया के कारण ही होता है। इस प्रकार यही ये 7 Elements तत्व या घटक है।

उपरोक्त उहाहरण को यहॉ एक चित्र के माध्यम से समझाने का प्रयास किया गया है

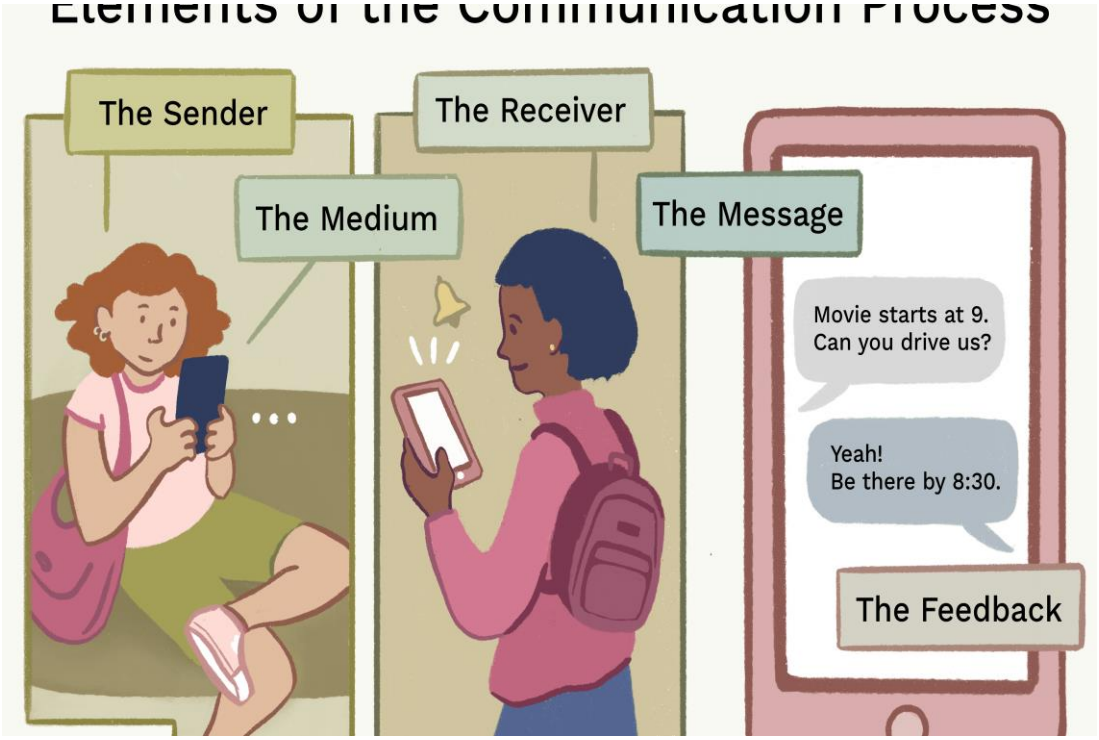

Linlks for notes -:
https://ecampusontario.pressbooks.pub/professionalcomms/chapter/1-2-elements-in-communication/

संप्रेषण के प्रकार Communication types

संम्प्रेषण को हम सामान्यतः निम्न रूपों में विभाजित कर सकते हैं–

पहले स्वरूप में 1. समूह के अनुसार जिसमें Communication इसे चार भागों में विभाजित करते हैं ये इस प्रकार के हो सकते हैं

1. Intrapersonal **communication** : जब आप अपने आप से बातचीत करते हैं, मन ही मन बातचीत करते हैं तो उसे intrapersonal **communication** कहा जाता है. ...
2. Interpersonal **communication** : इस तरह के **कम्युनिकेशन** में दो व्यक्ति का होना जरूरी है. ... जैसे दो व्यक्तियों का आपस में बातचीत

3. Group **communication** : ... समूहों में बातचीत करना
4. Mass **communication** : क व्यक्ति का बड़े समूहों से चर्चा

यदि हम संम्प्रेषण को उसकी प्रकृति के अनुसार विभाजित करगें तो यह 5 प्रकार के हो सकते हैं –

1. लिखित संचार या सम्प्रेषण Written **Communication**
2. मौखिक सम्प्रेषण Verbal **Communication**
3. सांकेतिक सम्प्रेषण Non Verbal **Communication**
4. दृश्यिक संम्प्रेषण Visual **Communication**
5. मिश्रित संम्प्रेषण Mixed or Meta **Communication**

संम्प्रेषण को भेजने के तरीके के आधार पर इसे तीन भागो में बॉटा जाता है

1, Simplex इसमें संदेश प्रेषक भेज सकता है ग्राही नही भेज सकता ।
2, Duplex इसमें संदेश प्रेषक व ग्राही दोनों ही एक साथभेज सकते है
3, Half Duplex इसमें संदेश प्रेषक व ग्राही दोनों एक साथ नही भेज सकते वे बारी बारी से एक बार प्रेषक व एक बार ग्राही भेज सकता है ।

यदि शिक्षा के क्षेत्र में या सामान्य जनता से संम्प्रेषण की जरूरत हो तो इसकी तीन विधियॉ हो सकती है अर्थात communication types -Educational and public communication यह तीन प्रकार से होती है

1. One to One Communication
2. One to Many Communication
3. Many to Many Communication

One to One Communication एक–से–एक संचार

एक–से–एक संचार तब होता है जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के साथ बोलता या लिखता है या अन्य किसी तरह से संदेश भेजता है तब यह एक–से–एक संचार ही होता

है , यह कही भी जैसे कोई दो व्यक्ति जैसे देखभाल करने वाले पेशेवर, संबंधी एक–दूसरे से मिलते हैं और एक–दूसरे के साथ या भागीदारों, रिश्तेदारों या देखभाल करने वाले लोगों के दोस्तों से बात करते हैं तो यहॉएक–से–एक संचार तब होता है ।

उहाहरण –: जब एक शिक्षक अपने एक विद्यार्थी से बात प्रश्न करता है तो वह इसप्रकार के मौखिक संम्प्रेषण की श्रेणी में आता है । सामान्यतः एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को कोई पत्र लिखता है तो वह भी One to One Communication कहलाता है ।

One to Many Communication एक–से–अनेक संचार

एक से कई या अनेक एक ऐसे संचार को संदर्भित करते हैं जिसमें केवल एक विशेष व्यक्ति ही प्रेषक होने का हकदार होता है और उसे सूचना प्रकाशित करने की अनुमति होती है। कई–से–कई संचार में, हालांकि, प्रत्येक भाग लेने वाला व्यक्ति संदेश पोस्ट कर सकता है और प्रत्येक व्यक्ति संदेश प्राप्त कर सकता है।

एक से अनेक का अच्छा उहाहरण है ,जब एक नेता जब जनता के बीच भाषण देता है तो वहां यही One to Many Communicationप्रकार का संम्प्रेषण होता है ।

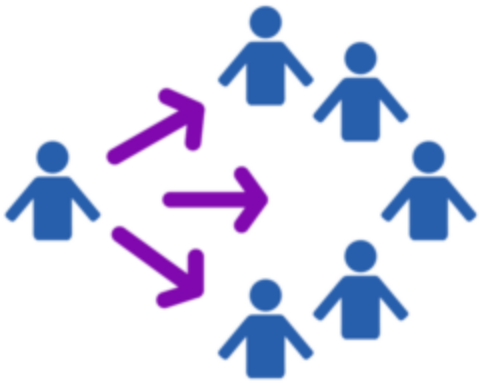

One to Many Communication

Many to Many Communication कई–से–कई संचार

इस प्रकार के संचार में अनेक लोग एक साथ अनेक लोगों से बातचीत कर सकते हैं यह आधुनिक युग में विशेष कर आई.सी.टी. संसाधनों के विकास व इंटरनेट व अन्य संचार माध्यमों के कारण किसी विषय पर एक साथ लोगों का समूह किसी चर्चा हेतु एक ही मंच पर से अनेक लोगों से बातचीत करता है , उहाहरण के रूप में टी.वी. में कई नेता एक साथ एक मंच पर या भिन्न–भिन्न जगह से किसी मुद्दे पर जनता के प्रश्नों का जवाब देतें हैं।

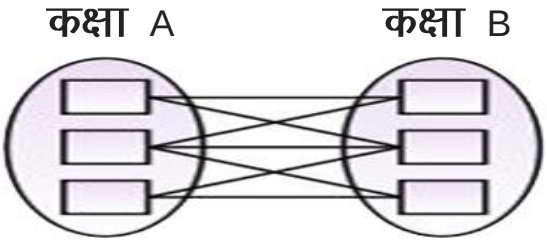

यदि दो कक्षाओं के बच्चें आपस में किसी विषय को लेकर चर्चा करते है तो यह भी अनेक से अनेक का संचार होगा

इस यूनिट के इस विषय वस्तु की जानकारी के लिये नीचे दिये गये लिंक से और विस्तृत अध्ययन करना चाहिये ।

- https://computerhindinotes.in/communication-in-hindi/
- https://www.youtube.com/watch?v=e7bah1h5ycE
- https://computerhindinotes.com/types-of-communication/
- https://youtu.be/z9F1fnKMhgs
- https://www.1hindi.com/verbal-and-non-verbal-communication-in-hindi/
- https://www.slideshare.net/tayyabsheikhg/types-of-communication-17110305
- https://www.slideshare.net/NB2829/types-of-communication-50153114
- https://slideplayer.com/slide/6256379/
- https://www.slideshare.net/natashauppal/types-of-communication-43707653
- https://computerhindinotes.com/types-of-communication/
- https://www.google.com/search?rlz=1C1CHBD_enIN855IN855&sxsrf=ALeKk02Q5WKHd4QEJI6r8TZRb1fSt2EqFQ:1596026769544&q=types+of+communication+pdf&sa=X&ved=2ahUKEwjE_JmFv_LqAhXOc30KHe0yDWYQ1QIoAHoECAwQAQ

Information and communication technologies in teaching contexts and the need for the ICT devices

शिक्षण के संदर्भ में सूचना व संचार तकनीकी तथा इसके लिए आई.सी. टी.उपकरणों की आवश्यकता

शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) शिक्षा का वह उपागम है जो आज विद्यार्थियों या सीखने वालों को समस्त प्रकार की जानकारी या सूचना के वितरण का समर्थन, संवर्द्धन और अनुकूलन करने के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग करता है। दुनिया भर में किए गए विभिन्न शोध से यह पता चला है कि आईसीटी एक बेहतर संसाधन के रूप में आज शिक्षण और बेहतर शिक्षण विधियों को जन्म दे सकता है। इसलिए यह आज शिक्षक और विद्यार्थियों दोनो के लिए इसका ज्ञान आवश्यक हो गया है, यदि इसका उपयोग आज वह नही करता है तो अध्ययन अध्यापन में अने कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है ।

वर्तमान में सूचना संचार तकनीक (आईसीटी) मानव जीवन के हर पहलू को प्रभावित कर रही है। यह उसके प्रत्येक कार्य व्यवसाय, शिक्षा और मनोरंजन तथा जीविका व रोजमर्रा की जिदंगी में भी मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। इसके अलावा, कई लोग परिवर्तन के उत्प्रेरक के रूप में आईसीटी को पहचानते हैंय काम करने की स्थिति में परिवर्तन, जानकारी को संभालने और आदान–प्रदान करना, शिक्षण विधियों, सीखने के दृष्टिकोण, वैज्ञानिक अनुसंधान और सूचना संचार प्रौद्योगिकियों तक पहुँचने में। इस डिजिटल युग में, 21 वीं शताब्दी के कौशल को सीखने और लागू करने के लिए छात्रों को अवसर प्रदान करने के लिए कक्षा में आईसीटी का उपयोग महत्वपूर्ण है। आईसीटी शिक्षण और सीखने में सुधार करता है और शैक्षणिक वातावरण के रचनाकारों की भूमिका निभाने में शिक्षकों के लिए इसका महत्व है। ICT एक शिक्षक को अपने शिक्षण को आकर्षक रूप से प्रस्तुत करने में मदद करता है और किसी भी स्तर के शैक्षिक कार्यक्रमों में शिक्षार्थियों के लिए सीखने में सक्षम बनाता

है। आज भारत में आईसीटी के शब्द से प्रशिक्षण कार्यक्रमों को उपयोगी और आकर्षक बनाया जा रहा है। इंटरनेट और इंटरैक्टिव मल्टीमीडिया द्वारा सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) को स्पष्ट रूप से भविष्य की शिक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण ध्यान केंद्रित करने और औपचारिक शिक्षण और सीखने में प्रभावी ढंग से एकीकृत करने की आवश्यकता है – विशेष रूप से एक शिक्षा संस्थान में।
सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) छात्रों के सीखने को प्रभावित कर सकती है जब शिक्षक और विद्यार्थी दोनों डिजिटल रूप से साक्षर होते हैं और समझते हैं कि इसे पाठ्यक्रम में कैसे एकीकृत या समाहित किया जाए। पूर्वस्कूली जानकारो का संचार, सृजन, प्रसार, स्टोर और प्रबंधन करने के लिए आईसीटी उपकरणों के विविध सेट का उपयोग करते हैं। कुछ संदर्भों में, ICT शिक्षण–अधिगम संवादात्मकता का भी अभिन्न अंग बन गया है, जैसे कि इंटरएक्टिव डिजिटल व्हाइटबोर्ड के साथ चॉकबोर्ड को बदलने के रूप मं, कक्षा के समय के दौरान सीखने के लिए छात्रों के अपने स्मार्टफोन या अन्य उपकरणों का उपयोग करना, और इसकी सहायता से किए गए कक्षा शिक्षण को जहाँ छात्र बेहत्तर पाते हैं और यह भी देखते हैं, इनका उपयोग वे घर पर स्वयं कंप्यूटर पर अधिक संवादात्मक अभ्यास के लिए कक्षा के समान ही उसी समय में उपयोग कर सकते हैं । जब शिक्षक डिजिटल रूप से साक्षर होते हैं और आईसीटी का उपयोग करने क लिए प्रशिक्षित होते हैं, तो यह दृष्टिकोण उच्च रचनात्मक सोच कौशल पैदा कर सकते हैं, छात्रों को अपनी समझ को व्यक्त करने के लिए रचनात्मक और व्यक्तिगत विकल्प प्रदान कर सकते हैं और छोड़ सकते हैं। छात्रों ने समाज और कार्यस्थल में चल रहे तकनीकी परिवर्तन से निपटने के लिए बेहतर तैयारी की। आईसीटी मुद्दे योजनाकारों को शामिल करना चाहिए कुल लागत–लाभ समीकरण पर विचार करना, अपेक्षित बुनियादी ढांचे की आपूर्ति और रखरखाव करना, और सुनिश्चित करना है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में आई.सी.टी. को और

अधिक महत्व इसी उद्देश्य से दिया गया है कि इसका प्रयोग शिक्षक के साथ विद्यार्थी स्कूलों में ही करना प्रारंम्भ कर दे । जो कि नई नीति के समर्थन और अन्य नीतियों के साथ प्रभावी आईसीटी उपयोग के उद्देश्य से अध्ययन अध्यापन की सम्पूर्ण प्रकिया से मेल खाते हैं।

सूचना संप्रेषण तकनीक के उपयोग क्षेत्र

आई.सी.टी. के उपकरण व शालाओं में उसकी उपयोगिता–:

स्मार्ट बोर्ड–: कक्षाओं में ब्लेकबोर्ड का स्थान पहले व्हाइट बोर्ड ने लिया और अब व्हाइट बोर्ड का स्थान स्मार्ट बोर्ड ले रहा है, क्योंकि यह बोर्ड कई सुविधाओं से युक्त है, वही इसका उपयोग विद्यार्थियों को ज्यादा प्रभावित करती है , सामान्य बोर्ड की तुलना में यह विभिन्न रंगो में लेखन की सुविधा तो देता हो है वही कलर व चित्र को बनाने में कई प्रकार के टूल भी उपलब्ध कराता है । सबसे प्रमुख विशेषता इसकी मेमोरी व स्टोरेज की भी है,जिससे पूर्व दिनों के कार्य को वहीं से पुनः शुरू किया जा सकता है , जो पहले कभी संम्भव नहीं था, इसमें कई और सुविधायें भी होती है , जिससे शिक्षक अपने टेबल में बैठ कर किये कार्य को भी बोर्ड में दिखा सकता है आवश्यकता पड़ने पर छात्रों को उसे भेज भी सकता है ।

मल्टोमीडिया टेक्स्टबुक –: सभी कक्षाओं के लिए अब सभी राज्यों में राज्य व केन्द्रिय पाठ्यकम की पुस्तके मल्टीमीडिया के रूप में उपलब्ध हो रही है ,इससे विद्यार्थियों को पढ़ने व सुनने तथा आनंद के साथ सीखने के अवसर प्राप्त हो रहें हैं, और शिक्षा के उद्देश्यों

को भी पूरा किया जा सकता है, हर पाठ के प्रारंम्भ में ही इसके लिये एक यूनिकोड छपा होता है, जिसे मोबाइल या कम्प्यूटर एप के जरिये जब हम जुड़ जाते हैं तो हमें उस पाठ को चित्रों,विडियो व आडियो द्वारा अध्ययन सामाग्री की प्रस्तुतीकरण की नवीन तकनीकी का पता चलता है । छत्तीसगढ़ राज्य हेतु भी राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद रायपुर ने इस तरह की अधिकांश पुस्तकें तैयार कर ली है और इसका प्रयोग भी शिक्षा सत्र 2019–20 से शुरू कर दिया गया है, परन्तु सही जानकारी के अभाव में इसका उपयोग कम ही स्कूलों में हो रहा है। सरकार की एक नवीन योजना के अंतर्गत जिले के 400 शालाओं को पूर्ण आई.सी.टी. आधारित शालाओं के रूप में बदलने का काय भी प्रारम्भ किया जा रहा है। इससे स्पष्ट है कि आगे की शिक्षा व्यवस्था में आई.सी.टी. का प्रयोग बढ़ता जायेगा ।

ई–लाइब्रेरी –: लाइब्रेरी में पुस्तकों को खरीदना फिर उनको संम्भाल कर रखना, पश्चात पाठकों को लेना–देना भी बहुत कठिन काम होता है, इन सभी के लिये एक अच्छी व्यवस्था आज के आई.सी.टी. की एक बेहतरीन सौगात है ई–लाईब्रेरी व्यवस्था जो ज्यादात्तर स्वसंचालित होती है,और पुस्तकों की ऐसी व्यवस्था की छोटी सी जगह में लाखों की पुस्तकों का विशाल संग्रह मिल जाता है, एक विद्यालय में यदि यह व्यवस्था हो जावे तो फिर विद्यार्थियों को पुस्तकों के लिये ज्यादा परेशान नहीं होना पड़ता , पर इन सब के

लिये थोड़ा ज्ञान आई.सी.टी. के विद्याार्थियों को भी होना आवश्यक है ।

आभासी प्रयोगशाला या वर्चुअल लेब का उपयोग –: आज प्रयागशाला में महॅगे उपकरणों से प्रयोग कराने व कई प्रयोगों में बार–बार रॉ–मटेरियल्स की आवश्यकता आदि को ध्यान में रखकर इस तकनीकी का प्रयोग शालाओं में कराया जा रहा है । जीवविज्ञान विषय में पर्यावरण की सुरक्षा की दृष्टि से जीवों को बचाने के लिये भी इस तकनीकी का प्रयोग अधिक उपयुक्त माना जाता है, चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्रों में भी यह तकनीकी अब एक अच्छे साधन के रूप में उपयोग किया जा रहा है ।

बायोमेट्रिक उपस्थिति –: शालाओं में विद्याार्थियों की समय पर उपस्थिति व उसका रिकार्ड व्यवस्थित रखना बहुत कठित काम होता है, इसे बायोमेट्रिक मशीन से बहुत बढ़िया ढ़ग से रखा जाने लगा है , इससे शिक्षको की समय पर उपस्थिति भी को सुनिश्चित किया जा रहा है। इसप्रकार शिक्षा प्रशासन व प्रबंधन में आई.सी.टी. की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है।

सी.सी. कैमरे से सुरक्षा की व्यवस्था–: सभी शालाओं में जहॉ आधुनिक संसाधनों की व्यवस्था है , वहॉ सुरक्षा की दृष्टि से सी.सी. कैमरे से पूरे परिसर की निगरानी एक ही स्थान से आसानी से किया जा सकता है और यहॉ तक रात्रि में भी इसके माध्मम से संस्था की सुरक्षा की जा सकती है, सुरक्षात्मक उपायों में यह सबसे महत्वपूर्ण

उपकरण है जिसका शालाओं,स्कूल बसों,सायकल स्टैंड,कैटिंन व सभी संवेदनशील स्थानों में जहॉ सतत् निगरानी की आवश्यकता महसूस होती है उपयोग किया जाता है ।

शिक्षक व विद्याार्थी का सोशल नेटवर्किंग सेवा–:

सामाजिक नेटवर्किंग सेवा अपरंपरागत संम्प्रेषण साधन है जो संप्रेषण के मीडिया प्रिंट ,इलेक्ट्रानिक एवं अन्य समानांतर साधनों के बीच संबध को निर्मित करता है । यहॉ सोशल का अर्थ अपनी जानकारी एवं विचार को दूसरों तक पहुॅचाना या बॉटना है, यह एक प्रकार का आपस में संवाद ही है, वहीं मीडिया का तात्पर्य बातचीत, चैटिंग जहॉ कोई माध्यम या साधन भी हो सकता है के द्वारा संप्रेषण करने से है। इस तरह यह वेब पर आधारित संचार उपकरण है जो अपनी और लोगों की जानकारी को एक दूसरे तक पहुॅचाने का काम करती है सोशल साइट्स के बहुत से फीचर्स (Features) हैं जैसे यूजर एकाउंट, प्रोफाइल पेज, फालोवर्स, समूह साइट्स, न्यूजफीड, नोटिफिकेशन, लाईक, कमेंट, शेयर, आदि ये सभी सोशल साइट्स के सामान्य फीचर्स है ं इसके अतिरिक्त सोशल साइट्स के और भी कई फीचर्स साइट्स के अनुसार भिन्न भिन्न हो सकते हैं, जैसे सामाजिक नेटवर्किंग में फेसबुक लिंक्डइन,वॉट्सअप, गूगल माइक्रो ब्लागिंग–ट्वीटर,टमब्लर, एवं फोटो शेयरिंग के लिये इंस्टाग्राम, स्नेपचेट, पिनटटेस्ट, वीडियो शेयरिंग यू–ट्यूब, फेसबुक लाइव,पेरीसकोप का उपयोग होता है इसमें फेसबुक, वाट्सअप , वीचेट, इंस्टाग्राम, टवीटर स्नेपचेट, यू–टयूब का प्रयोग ही सर्वाधिक

होता है । वर्ल्ड वाइड वेब पर प्रारंभिक सामाजिक नेटवर्किंग सामान्यीकृत ऑनलाइन समुदायों के रूप में शुरू हुई जैसे—The globe.com 1994 जियोसिटीज 1995, Tripod.com 1995, Classmates.com में ईमेल पते के माध्यम से एक दूसरे को जोड़ने का काम किया। सामाजिक नेटवर्किंग के नए तरीके 1990 के अंत तक विकसित किए गए एवं 2002 में फ्रेंडस्टर के आने के साथ नई पीढ़ी के लिए इंटरनेट जोड़ने की मुख्य साधन बनी । इसके 1 वर्ष बाद ही माईस्पेस एवं लिंक्डइन आया फिर बेबो। इस तरह 2005 तक माईस्पेस में देखे जाने वाले पेजों की संख्या गूगल से अधिक थी।

कम्प्यूटर के जरिये होने वाले सामाजिक पारस्परिक संपर्को को कंम्प्यूटर नेटवर्किंग की संभाव्यता के रूप में काफी पहले से सुझाया गया था। (एस. रौक्सैन हिल्ट्ज और मर्रे टुरोफ, एडिसन वेस्ली 1978, 1993) द्वारा द नेटवर्किंग नेशन) कम्प्यूटर के जरिये होने वाले संचार के द्वारा सामाजिक नेटवर्किंगों का आधार बने, इनमें यूजरनेट, आरयानेट, लिस्टसर्व तथा बुलिटन बोर्ड सेवाएं (बी.बी.एस) शामिल थी। विभिन्न शिक्षण संस्थाज अपने विद्यार्थियों को अधिकांश सूचनाएं वाट्सअप या ईमेल या अन्य सामाजिक नेटवर्किंग की सहायता से उपलब्ध करात्री है यहॉ भी इसकी उपयोगिता का पता चलता है, कि जो सूचना कई दिनों बाद डाक से घर पहुॅचती थी व उसका उत्तर आने में काफी समय लगता था वह अब सब पलक झपकते हो जाता है ।

परीक्षा व मूल्याकंन कार्य –: कम्प्यूटर तो परीक्षा व मूल्यांकन के लिये वरदान साबित हुआ है, संस्थान अब अपने समस्त परीक्षा कार्य जिसमें परीक्षक व परीक्षा केन्द्र के चयन व प्रश्न पत्र निर्माण से लेकर विद्यार्थियों को अंकसूची जारी करने तक का समस्त कार्य कम्प्यूटर की सहायता से पूर्ण गोपनीयता व सुरक्षात्मक तरीके से पहले की तुलना में बेहत्तर व त्रुटि रहित स्वरूप में सम्पन्न होने लगा है ।

छत्तीसगढ़ सरकार की योजनायें व प्रयास

छत्तीसगढ़ सरकार की कई योजनायें विशेष कर स्कूल शिक्षा विभाग में सूचना संप्रेषण तकनीकी के उपयोग को बढ़ावा देने वाली है, सरकार की योजना *""पढ़ाई तुंहर दुआर ""* जिसमें बच्चें को उसके घर में ही शिक्षा उपलब्ध कराने की योजना में इसी तकनीकी का उपयोग होगा, और भी अनेक योजनाओं से शिक्षा को घर तक अथवा शालाओं तक पहुॅचाने का कार्य होगा, इसलिए भी स्कूलों को आने वाले वर्षो में सूचना तकनीकी से सुसज्जित किये जाने की योजना है , इस पर बड़े स्तर पर कार्य प्रारंम्भ भी हो चुका है ।

आई.सी.टी. डपकरण जिनका प्रयोग शिक्षा के क्षेत्र में होता है, इसकी अधिंकाश की मोटे तौर पर चर्चा उपर की गई है इनमें से कुछ की विस्तार से चचा अब हम नीचे करगें जिसे हम आई.सी.टी. डिवाइसेस के रूप में जानते हैं ।

आई.सी.टी. उपकरण ICT devices जिनका प्रयोग शिक्षा के क्षेत्र में होता है आईए उन्हें हम जाने –:

General ICT tools for teaching and learning

- Desktop and laptops.
- **Projector**.
- **Digital cameras**.
- Printer.
- Photocopier.
- Tablets.and Notebook & pad
- Pen Drive,CD, DVD, Other Storage Devices
- Whiteboard.
- Microphone.
- Speaker
- Smart phone
- Smart Bord
- Scanner
-

उपरोक्त विषय वस्तु की जानकारी के लिये नीचे दिये गये लिंक से और विस्तृत अध्ययन करना चाहिये ।

- http://learningportal.iiep.unesco.org/en/issue-briefs/improve-learning/curriculum-and-materials/information-and-communication-technology-ict
- https://www.researchgate.net/publication/325087961_Information_Communication_Technology_in_Education
- https://www.youtube.com/watch?v=VLottMNEWLk
- https://en.wikipedia.org/wiki/Information_and_communications_technology